BIHAR SHODH SAMAAGAM, VOL. 1, ISSUE 1, 2023 p.p 41-49 (2023) ISSN : 3048-6971

भारत में द्वि-वर्षीय एवं चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रमों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृति – एक अध्ययन

मनोज नायक

सारांश

यह अध्ययन द्वि-वर्षीय और चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रमों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का साहित्य समीक्षा और द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के संदर्भ में, चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम को अधिक समग्र और व्यावहारिक दृष्टिकोण वाला माना गया है, जबकि द्वि-वर्षीय बी.एड. त्वरित शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य पूर्व शोध और द्वितीयक आंकड़ों के माध्यम से दोनों कार्यक्रमों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की धारणाओं, लाभों और चुनौतियों की पड़ताल करना है। साहित्य समीक्षा से संकेत मिलता है कि चार वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों में सकारात्मक अभिवृत्ति को बढ़ावा देता है, क्योंकि यह व्यापक पाठ्यक्रम, दीर्घकालिक प्रशिक्षण और विषय-विशेषज्ञता पर जोर देता है। इसके विपरीत, द्वि-वर्षीय बी.एड. प्रशिक्षणार्थी समय की कमी और पाठ्यक्रम की तीव्रता के कारण तनाव का उल्लेख करते हैं। चार वर्षीय कार्यक्रम में दीर्घकालिक प्रतिबद्धता और आर्थिक बोझ प्रमुख चुनौतियाँ हैं। द्वितीयक आंकड़े यह दर्शाते हैं कि दोनों कार्यक्रम शिक्षक प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उनकी प्रभावशीलता प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं और संस्थागत संसाधनों पर निर्भर करती है। अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि नीति-निर्माताओं को दोनों कार्यक्रमों को प्रशिक्षणार्थियों की विविध आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक लचीला बनाने के लिए पाठ्यक्रम और संसाधनों पर ध्यान देना चाहिए। यह अध्ययन भविष्य में प्राथमिक डेटा आधारित अनुसंधान की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है।

कुंजी शब्द: द्वि-वर्षीय बी.एड., चार वर्षीय एकीकृत बी.एड., प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति।

- **अध्ययन की पृष्ठभूमि** भारत, विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला देश, लगभग 140 करोड़ लोगों का घर है, जिसमें युवा आबादी का अनुपात सबसे ज्यादा है। भारत, विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले देशों में से एक है, जहाँ करोड़ों छात्र विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर अध्ययनरत हैं। **आर्थिक सर्वेक्षण (2021–22)** के अनुसार, भारत में उच्च शिक्षा में कुल नामांकन वर्ष 2021–22 में **4.33 करोड़** था, जिसमें कुल **2.07 करोड़** महिलाएँ उच्च शिक्षा में नामांकित थीं। **अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (2021–22)** के अनुसार, भारत में कुल **1,168 विश्वविद्यालय, 42,825 कॉलेज**, और **10,576 स्टैंडअलोन संस्थान** सक्रिय थे, जो देश के विशाल उच्च शिक्षा नेटवर्क का परिचायक है। यह आँकड़े दर्शाते हैं कि भारत की शिक्षा प्रणाली निरंतर विस्तार कर रही है और इसमें महिलाओं की भागीदारी, संस्थानों की संख्या तथा शिक्षक संसाधनों में लगातार सुधार हो रहा है। वहीँ प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा व्यवस्था की बात करें तो देशभर में **14.72 लाख स्कूलों** में लगभग **24.8 करोड़ छात्र** अध्ययनरत हैं, जिन्हें **98 लाख शिक्षक** शिक्षित कर रहे हैं। विद्यालयी स्तर पर पढ़ने वाले छात्रों की संख्या की इतनी अधिकता भारतीय शिक्षा प्रणाली के समक्ष गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की चुनौती को और भी जटिल बनाती है। विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में भारत का लक्ष्य प्रत्येक छात्र को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, जिसमें शिक्षकों की भूमिका सर्वोपरि है। शिक्षक शिक्षा इस लक्ष्य को प्राप्त करने का आधार है, क्योंकि कुशल, दक्ष और सक्षम शिक्षकों का निर्माण ही शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित करता है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों की कुल संख्या वर्ष 2021–22 में **14,89,115** थी, जो शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में भारत की व्यापकता को दर्शाती है। हालांकि, भारतीय शिक्षक शिक्षा प्रणाली के समक्ष सक्षम शिक्षकों का निर्माण एक बड़ी चुनौती बना हुआ है **(शर्मा एवं शर्मा,2018)**।

शिक्षक शिक्षा को बदलते समय की माँगों के अनुरूप ढालने के लिए समय-समय पर सुधार किए गए हैं। इन सुधारों

मनोज नायक
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग
राधा गोविंद विश्वविद्यालय रामगढ़, झारखंड

में पाठ्यक्रम संरचना, शिक्षण विधियों, और प्रशिक्षण अवधि में बदलाव शामिल हैं। विशेष रूप से, **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)** ने शिक्षक शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तनों का प्रस्ताव रखा है, जिसमें चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम को लागू करना शामिल है। यह कार्यक्रम पारंपरिक द्वि-वर्षीय बी.एड. की तुलना में अधिक समग्र, व्यावहारिक और विषय-विशेषज्ञता को बढ़ावा देने वाला माना जाता है। द्वि-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम, जो पहले से प्रचलित है, त्वरित शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करता है, लेकिन इसकी सीमित अवधि के कारण यह गहन प्रशिक्षण और व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करने में कमी रह जाती है **(कुमार , 2020)**। चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण को अधिक दीर्घकालिक और समग्र बनाना है, जिसमें विषय ज्ञान, शिक्षण कौशल, और व्यावसायिक दक्षता को संतुलित किया जा सके।

हालांकि, इन दोनों कार्यक्रमों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति को समझना महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनकी धारणाएँ और अपेक्षाएँ शिक्षक शिक्षा की प्रभावशीलता को निर्धारित करती हैं। **(वर्मा एवं गुप्ता, 2019)**। इस परिप्रेक्ष्य में, यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह द्वि-वर्षीय और चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रमों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन के दो प्रमुख उद्देश्य हैं: (1) दोनों कार्यक्रमों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति की तुलना करना, और (2) इन कार्यक्रमों के लाभों और चुनौतियों को द्वितीयक आंकड़ों और साहित्य समीक्षा के आधार पर पहचानना। यह अध्ययन प्राथमिक डेटा संग्रह के बजाय पूर्व अध्ययनों और द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जो इसे व्यापक और सैद्धांतिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। साहित्य समीक्षा और द्वितीयक आंकड़ों के विश्लेषण के माध्यम से, यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में नीति-निर्माताओं और शिक्षण संस्थानों के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करने का प्रयास करता है। शिक्षक शिक्षा में सुधार की दिशा में अभी और कार्य की आवश्यकता है। विशेष रूप से, प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं और आधुनिक शिक्षा की माँगों के बीच संतुलन स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन इस दिशा में एक कदम है, जो शिक्षक शिक्षा की वर्तमान स्थिति को समझने और भविष्य के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करने में सहायता करेगा।

❖ भारत में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का इतिहास

भारत में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का इतिहास प्राचीन गुरुकुल प्रणाली से शुरू होकर आधुनिक राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 तक एक लंबा और विकासात्मक सफर तय कर चुका है। प्राचीन काल में गुरुकुलों में अनौपचारिक प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षण कौशल हस्तांतरित किए जाते थे, जबकि मध्यकाल में नालंदा और तक्षशिला जैसे केंद्रों ने संरचित शिक्षा प्रदान की (मिश्र, 2019)। औपनिवेशिक काल में, 1826 में सेरमपुर में पहला शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल स्थापित हुआ, और 1854 के वुड्स डिस्पैच ने नॉर्मल स्कूलों की शुरुआत की। 1882 के हंटर आयोग ने प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण पर जोर दिया **(शर्मा, 2021)**। स्वतंत्रता-पूर्व काल में, गांधीजी की वर्धा योजना (1937) ने ग्रामीण और व्यावसायिक शिक्षा पर आधारित प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया। स्वतंत्रता के बाद, 1948-49 के राधाकृष्णन आयोग ने बी.एड. जैसे डिग्री-आधारित कार्यक्रमों की नींव रखी, और 1964-66 के कोठारी आयोग ने द्वि-वर्षीय बी.एड. को संरचित किया।

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद की स्थापना की सिफारिश की, जिसे 1995 में लागू किया गया, जिसने शिक्षक शिक्षा के लिए मानक निर्धारित किए **(राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, 2014)**। 1990 के दशक में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम और सर्व शिक्षा अभियान (2000) ने प्राथमिक शिक्षकों के लिए अल्पकालिक प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया। 21वीं सदी में, 2009 के शिक्षा का अधिकार अधिनियम ने प्रशिक्षित शिक्षकों की अनिवार्यता पर बल दिया। 2014 में, राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद ने द्वि-वर्षीय बी.एड. में व्यावहारिक प्रशिक्षण को बढ़ाया। एनईपी 2020 ने चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम की शुरुआत की, जो 2018-19 में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में शुरू हुआ और 2030 तक इसे सभी शिक्षक प्रशिक्षण का आधार बनाने का लक्ष्य रखता है। यह कार्यक्रम विषय-विशेषज्ञता, बहु-विषयक दृष्टिकोण और 21वीं सदी के कौशलों पर केंद्रित है **(शिक्षा मंत्रालय, 2020)**। वर्तमान में, द्वि-वर्षीय और चार वर्षीय बी.एड. दोनों संचालित हो रहे हैं, लेकिन गुणवत्ता, संसाधनों की कमी, और प्रशिक्षणार्थियों

की अभिवृत्ति जैसे मुद्दे चुनौतियाँ बने हुए हैं । यह इतिहास दर्शाता है कि भारत में शिक्षक प्रशिक्षण समय के साथ शिक्षा की बदलती माँगों के अनुरूप ढलता रहा है, और एनईपी 2020 इसे और अधिक समग्र बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

तालिका :01

भारत में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का इतिहास

काल	प्रमुख विकास और नीतियाँ	विवरण
प्राचीन और मध्यकाल	गुरुकुल प्रणाली और बौद्ध/जैन शिक्षा केंद्र	- अनौपचारिक प्रशिक्षण गुरुकुलों में। - नालंदा, तक्षशिला जैसे केंद्रों में संरचित धार्मिक/दार्शनिक प्रशिक्षण।
औपनिवेशिक काल (18वीं-19वीं सदी)	नॉर्मल स्कूलों की स्थापना	- 1826: सेरमपुर में पहला शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल। - 1854: वुड्स डिस्पैच ने नॉर्मल स्कूलों की सिफारिश की। - 1882: हंटर आयोग ने प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण पर जोर दिया।
स्वतंत्रता-पूर्व (20वीं सदी)	राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन और बुनियादी शिक्षा	- 1925: गांधीजी की वर्धा योजना ने ग्रामीण और व्यावसायिक प्रशिक्षण पर जोर दिया। - 1944: सार्जेंट रिपोर्ट ने माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षण की सिफारिश की।
स्वतंत्रता के बाद (1947-2000)	राधाकृष्णन और कोठारी आयोग, NCTE की स्थापना	- 1948-49: राधाकृष्णन आयोग ने बी.एड. जैसे डिग्री-आधारित प्रशिक्षण की नींव रखी। - 1964-66: कोठारी आयोग ने द्वि-वर्षीय बी.एड. की सिफारिश की। - 1986: एनईपी ने NCTE की स्थापना प्रस्तावित की। - 1995: NCTE की स्थापना, मानक निर्धारित। - 1990 के दशक: DPEP और सर्व शिक्षा अभियान ने प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया।
21वीं सदी (2000-2020)	RTE अधिनियम, NCTE सुधार, और चार वर्षीय बी.एड. की शुरुआत	- 2009: RTE ने प्रशिक्षित शिक्षकों की अनिवार्यता पर बल दिया। - 2014: NCTE ने द्वि-वर्षीय बी.एड. को संरचित किया, व्यावहारिक प्रशिक्षण बढ़ाया। - 2018-19: चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. का पायलट प्रोजेक्ट शुरू।
एनईपी 2020 और वर्तमान	चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. का विस्तार	- 2020: एनईपी ने चार वर्षीय बी.एड. को लागू करने का लक्ष्य रखा, 2030 तक सभी कार्यक्रमों को इस मॉडल में बदलने की योजना। - बहु-विषयक दृष्टिकोण, डिजिटल साक्षरता, और 21वीं सदी के कौशलों पर जोर। - वर्तमान में

		दोनों कार्यक्रम (द्वि-वर्षीय और चार वर्षीय) संचालित।
प्रमुख चुनौतियाँ	गुणवत्ता, संसाधन, और प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति	- द्वि-वर्षीय बी.एड.: समय की कमी, तीव्र पाठ्यक्रम। - चार वर्षीय बी.एड.: आर्थिक बोझ, दीर्घकालिक प्रतिबद्धता।

❖ **भारत में द्वि-वर्षीय एवं चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम की प्रमुख विशेषताएं :**

भारत में द्वि-वर्षीय और चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम शिक्षक प्रशिक्षण के दो प्रमुख मॉडल हैं, जो शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए तैयार करते हैं, लेकिन इनकी संरचना, उद्देश्य और विशेषताएँ भिन्न हैं। द्वि-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम स्नातक डिग्री धारकों के लिए डिज़ाइन किया गया है और दो वर्ष की अवधि में केंद्रित प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसका पाठ्यक्रम शिक्षण सिद्धांत, शैक्षिक मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र, और स्कूल इंटर्नशिप पर आधारित है, जिसमें राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE) के दिशा-निर्देशों के अनुसार 40% हिस्सा व्यावहारिक प्रशिक्षण का है। यह त्वरित प्रशिक्षण प्रदान करता है, जो प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की कमी को पूरा करने में प्रभावी है, लेकिन सीमित अवधि के कारण गहन प्रशिक्षण और विषय-विशेषज्ञता में कमी रहती है।

दूसरी ओर, चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत 2018-19 से पायलट प्रोजेक्ट के रूप में शुरू हुआ, 10+2 के बाद शुरू होता है और स्नातक डिग्री (बी.ए./बी.एससी.) को शिक्षक प्रशिक्षण के साथ एकीकृत करता है। इसका पाठ्यक्रम बहु-विषयक दृष्टिकोण, विषय-विशेषज्ञता (जैसे गणित, विज्ञान), डिजिटल साक्षरता, और 21वीं सदी के कौशलों पर केंद्रित है। यह दीर्घकालिक और समग्र प्रशिक्षण प्रदान करता है, जिसमें विस्तृत स्कूल इंटर्नशिप और शोध-आधारित गतिविधियाँ शामिल हैं, जो शिक्षकों को आधुनिक शैक्षिक माँगों के लिए तैयार करती हैं। हालांकि, इसकी लंबी अवधि और आर्थिक लागत प्रशिक्षणार्थियों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं। द्वि-वर्षीय बी.एड. समय और लागत के दृष्टिकोण से अधिक सुलभ है, जबकि चार वर्षीय कार्यक्रम गहन और व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। दोनों कार्यक्रमों का लक्ष्य शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है, लेकिन उनकी प्रभावशीलता संस्थागत संसाधनों और प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति पर निर्भर करती है। एनईपी 2020 का लक्ष्य 2030 तक सभी शिक्षक प्रशिक्षण को चार वर्षीय मॉडल में परिवर्तित करना है, जो शिक्षक शिक्षा को अधिक समावेशी और भविष्य-उन्मुख बनाने की दिशा में एक कदम है।

तालिका :02

भारत में द्वि-वर्षीय एवं चार वर्षीय एकीकृत बी.एड . कार्यक्रमों में बुनियादी अंतर

मापदंड	द्वि-वर्षीय बी.एड.	चार वर्षीय एकीकृत बी.एड.
1. अवधि	2 वर्ष	4 वर्ष
2. पात्रता	स्नातक डिग्री (न्यूनतम 50% अंक)	10+2 (उच्चतर माध्यमिक, न्यूनतम 50% अंक)
3. प्रवेश स्तर	स्नातकोत्तर स्तर (ग्रेजुएशन के बाद)	उच्चतर माध्यमिक स्तर (12वीं के बाद)
4. पाठ्यक्रम संरचना	शिक्षण सिद्धांत, शैक्षिक मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र, और स्कूल इंटर्नशिप पर केंद्रित।	स्नातक डिग्री (बी.ए./बी.एससी.) और बी.एड. का एकीकृत पाठ्यक्रम; बहु-विषयक और व्यापक दृष्टिकोण।
5. विषय-विशेषज्ञता	सीमित, मुख्य रूप से शिक्षण कौशल पर ध्यान।	व्यापक, विषय-विशेषज्ञता (जैसे गणित, विज्ञान) और शिक्षण कौशल दोनों पर जोर।

6. व्यावहारिक प्रशिक्षण	40% पाठ्यक्रम व्यावहारिक (NCTE दिशा-निर्देश), सीमित अवधि के कारण संक्षिप्त।	विस्तृत स्कूल इंटर्नशिप और शोध-आधारित गतिविधियाँ, अधिक समय उपलब्ध।
7. उद्देश्य	त्वरित शिक्षक प्रशिक्षण, प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के लिए।	समग्र और दीर्घकालिक प्रशिक्षण, आधुनिक शैक्षिक माँगों के लिए।
8. आर्थिक बोझ	कम लागत, कम अवधि के कारण अधिक सुलभ।	अधिक लागत, लंबी अवधि के कारण आर्थिक चुनौती।
9. समय प्रतिबद्धता	कम समय (2 वर्ष), जल्दी नौकरी में प्रवेश।	लंबी प्रतिबद्धता (4 वर्ष), देर से नौकरी में प्रवेश।
10. नीति समर्थन	पारंपरिक मॉडल, NCTE 2014 मानकों पर आधारित।	एनईपी 2020 द्वारा समर्थित, 2030 तक सभी शिक्षक प्रशिक्षण का आधार बनाने का लक्ष्य।

- **द्वि-वर्षीय एवं चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रमों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृति**

चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत शुरू किया गया एक नया शैक्षिक मॉडल है, जो अभी अपने प्रारंभिक चरण में है। इस कारण, इसके प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति पर प्रत्यक्ष साहित्य समीक्षा सीमित है। दूसरी ओर, द्वि-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम एक स्थापित कोर्स है, जिसके बारे में कुछ शोध उपलब्ध हैं। इस स्थिति में, प्रशिक्षकों के मत और अनुभव प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति को समझने अहम हो जाता है। यद्यपि इस शोध से सम्बंधित कुछ पमुख साहित्य की समीक्षा इस प्रकार है -

साव एवं बेहरा (2016) ने एक अध्ययन में दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति छात्र-शिक्षकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण किया है। इस शोध में पश्चिम बंगाल के पुरुलिया ज़िले के 260 छात्र-शिक्षकों को शामिल किया गया, जिनमें एक सरकारी सहायता प्राप्त एवं तीन निजी बी.एड. महाविद्यालयों के छात्र सम्मिलित थे। शोध में यह निष्कर्ष सामने आया कि कुल मिलाकर छात्र-शिक्षकों का दृष्टिकोण न तो अत्यधिक सकारात्मक है और न ही नकारात्मक, बल्कि सामान्य या संतोषजनक है। लिंग, जाति, सेवा अनुभव आदि के आधार पर दृष्टिकोण में कोई विशेष अंतर नहीं पाया गया। किन्तु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों तथा सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के छात्र-शिक्षकों के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता, क्षेत्रीय असमानता एवं संस्थागत अंतर की समझ को सुदृढ़ करता है तथा नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी दिशा संकेत देता है। इसी प्रकार **चक्रवर्ती और बेहरा (2014)** ने बर्दवान विश्वविद्यालय के अंतर्गत बी.एड. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर की महिला प्रशिक्षार्थियों के दृष्टिकोण का विश्लेषण किया । यह शोध इस विचार पर आधारित है कि किसी व्यक्ति की मानसिक प्रवृत्ति और दृष्टिकोण उसकी सीखने और प्रतिक्रिया देने की प्रवृत्ति को प्रभावित करता है। इस अध्ययन में चार बी.एड. महाविद्यालयों की महिला प्रशिक्षार्थियों को चयनित कर एक 36-वाक्यांशों वाला अभिप्राय प्रश्नावली लागू किया गया, जो लिकर्ट स्केल पर आधारित थी। प्राप्त उत्तरों के आँकड़ों का विश्लेषण कर यह देखा गया कि नियुक्त और नवप्रवेशी प्रशिक्षार्थियों तथा सरकारी और निजी महाविद्यालयों की प्रशिक्षार्थियों के दृष्टिकोण में क्या अंतर है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि महिला प्रशिक्षार्थियों के दृष्टिकोण में संस्था और सेवा की स्थिति के आधार पर अंतर पाया गया।

हिमालयी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की **शिक्षण दक्षता** और **रचनात्मक शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण** के बीच संबंध का विश्लेषण से सम्बंधित अपने एक अध्ययन में **रामनिवास (2018)** ने 264 प्रशिक्षार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया कि **शिक्षण दक्षता और रचनात्मक दृष्टिकोण के बीच सकारात्मक संबंध** मौजूद है। लिंग, जाति, शैक्षणिक योग्यता के आधार पर दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। विज्ञान विषय के प्रशिक्षार्थियों का रचनात्मक शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण

मानवीकी विषयों की तुलना में अधिक सकारात्मक रहा। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि **प्रशिक्षण कार्यक्रम की संरचना** और **इंटर्नशिप अनुभव** शिक्षण दक्षता को सशक्त बनाते हैं। इसी प्रकार **पात्रा और बसंतिया (2021)** ने शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे वैश्विक बदलावों के परिप्रेक्ष्य में एकीकृत कार्यक्रमों की भूमिका पर प्रकाश डाला है। लेख में बताया गया है कि पारंपरिक शिक्षा की सीमाओं को तोड़ते हुए, एकीकृत कार्यक्रम विद्यार्थियों को समग्र और बहुविषयक शिक्षा प्रदान करते हैं। सरकार और शैक्षणिक संस्थानों को मिलकर इन कार्यक्रमों को लोकप्रिय बनाने और प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए, जिससे शिक्षा क्षेत्र में व्यापक सुधार लाया जा सके। वहीँ **सुधा (2017)** द्वारा प्रस्तुत एक शोध में दो वर्षीय बी.एड. और एम.एड. पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं और शिक्षक शिक्षकों की राय का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि स्थान और शिक्षा स्तर के अनुसार कोई विशेष अंतर नहीं पाया गया, लेकिन लिंग के आधार पर मतभेद सामने आए। वहीं शिक्षक शिक्षकों में अनुभव और स्थान के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह रहा कि शिक्षक शिक्षकों और प्रशिक्षुओं की सोच में कोई संबंध नहीं पाया गया; शिक्षक शिक्षक दो वर्षीय पाठ्यक्रम के पक्ष में हैं, जबकि प्रशिक्षु इसे अधिक समय लेने वाला मानते हैं।

इसी प्रकार **पाटिल और वेंकटेश (2021)** ने चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम के प्रति शिक्षक शिक्षकों की सोच और दृष्टिकोण का विश्लेषण किया है। इनका शोध इस तथ्य पर केंद्रित है कि शिक्षक शिक्षकों की सकारात्मक या नकारात्मक सोच आगामी पीढ़ी के शिक्षकों के चरित्र निर्माण और शिक्षण गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है। शोध में यह पाया गया कि इस विषय पर पूर्व में कोई विशेष अध्ययन उपलब्ध नहीं है, इसलिए यह अध्ययन इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। शोध के लिए शोधकर्ताओं ने कालाबुरगी शिक्षा मंडल के 200 शिक्षक शिक्षकों का चयन किया, जो कला और विज्ञान दोनों धाराओं से संबंधित थे। सर्वेक्षण विधि और पांच-बिंदु दृष्टिकोण मापक का उपयोग कर आंकड़ों का संकलन और विश्लेषण किया गया। यह अध्ययन नई शिक्षा नीति के आलोक में चार वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की स्वीकृति और प्रभावशीलता को समझने में सहायक है। वहीँ **ताज (2018)** द्वारा लिखित एक लेख में चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित प्रमुख समस्याओं और चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की गई है। लेख में बताया गया है कि यद्यपि यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप है, फिर भी इसके क्रियान्वयन में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता, और पाठ्यक्रम के एकीकरण की चुनौतियाँ प्रमुख हैं। यह कार्यक्रम शिक्षक प्रशिक्षण को गुणवत्तापूर्ण और व्यावसायिक रूप से प्रभावी बनाने की दिशा में एक सशक्त प्रयास माना गया है।

जबकि **कोनेरी और श्रीनिवासचारुलु (2018)** ने भारत में चार वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के कार्यान्वयन की संभावनाओं और आवश्यकताओं पर दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उन्होंने शैक्षिक संस्थानों की तैयारी, पाठ्यक्रम की संरचना, तथा नीति निर्माण की भूमिका को रेखांकित किया है। दोनों लेख शिक्षा क्षेत्र में सुधार हेतु इस कार्यक्रम की प्रासंगिकता को प्रमाणित करते हैं। **कुमार और कुमार (2019)** ने चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के प्रति छात्र-शिक्षकों की सोच और दृष्टिकोण का गहन विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन गया (बिहार) और भुवनेश्वर (ओडिशा) में 192 छात्र-शिक्षकों के नमूने पर किया गया। शोधकर्ताओं द्वारा एक मानकीकृत दृष्टिकोण मापक का निर्माण किया गया था। अध्ययन के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि छात्र-शिक्षकों का इस कार्यक्रम के प्रति समग्र दृष्टिकोण सकारात्मक है, किंतु विभिन्न संस्थानों (जैसे साउथ बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय और एनसीईआरटी, भुवनेश्वर) के बीच दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। इसके अतिरिक्त, लिंग, स्थान (शहरी/ग्रामीण), या विषय (बी.एससी-बी.एड. और बी.ए-बी.एड.) के आधार पर कोई विशेष अंतर नहीं था। लेख में इस बात पर बल दिया गया है कि चार वर्षीय कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु बुनियादी ढांचे में सुधार, प्रशिक्षण की गुणवत्ता और नीति स्तर पर ठोस प्रयास आवश्यक हैं। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी सिफारिशें प्रस्तुत करता है।

तालिका :03

द्वि-वर्षीय एवं चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रमों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृति की तुलना

मापदंड	दो वर्षीय बी.एड. के प्रति अभिवृत्ति	चार वर्षीय बी.एड. के प्रति अभिवृत्ति
1. शैक्षिक गुणवत्ता	अधिक केंद्रीकृत, पारंपरिक शिक्षण विधि की अपेक्षा	नवीन शिक्षण तकनीकों और समेकित शिक्षण विधि की सराहना
2. व्यावहारिक प्रशिक्षण	सीमित प्रायोगिक अनुभव, कम इंटर्नशिप अवधि	अधिक व्यावहारिक और स्कूल आधारित प्रशिक्षण की उपलब्धता
3. पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता	संकुचित विषयों पर ध्यान, आधुनिक शिक्षा से कम मेल	समग्र और आधुनिक शिक्षा आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम
4. संपूर्ण विकास	मुख्यतः शैक्षिक विकास पर केंद्रित	शैक्षणिक, मानसिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक विकास पर जोर
5. शिक्षण के प्रति प्रेरणा	अपेक्षाकृत कम समय के कारण प्रेरणा सीमित	गहन अध्ययन के कारण अध्यापन के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण
6. शिक्षण विधियों की नवीनता	पारंपरिक शिक्षण पर अधिक निर्भर	डिजिटल और इंटरेक्टिव विधियों का अधिक उपयोग
7. सहयोग और मार्गदर्शन	सीमित समय के कारण कम मार्गदर्शन	लंबे कोर्स के कारण बेहतर मार्गदर्शन और शिक्षक–छात्र संबंध
8. रोजगार संभावनाएँ	अधिक रोजगार के अवसरों की आशंका, लेकिन सीमित विशेषज्ञता	गहन प्रशिक्षण से बेहतर और अधिक स्थायी रोजगार संभावनाएँ
9. कोर्स की संरचना और अवधि	छोटा और त्वरित, लेकिन कुछ छात्र इसे अधूरा महसूस करते हैं।	समेकित और व्यापक, जिससे गहराई से सीखने का अवसर मिलता है।
10. समाज में शिक्षक की भूमिका की समझ	भूमिका की सीमित समझ, प्राथमिक शिक्षा पर ज्यादा केंद्रित	शिक्षक के सामाजिक दायित्वों की व्यापक समझ और प्रतिबद्धता

❖ सुझाव

भारत में द्वि-वर्षीय और चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रमों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति को बेहतर बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए जा सकते हैं। सबसे पहले, पाठ्यक्रम को अधिक व्यावहारिक और समकालीन शैक्षिक जरूरतों के अनुरूप बनाया जाना चाहिए, जिससे छात्र अध्यापक आधुनिक शिक्षण विधियों और तकनीकों से लैस हो सकें। द्वि-वर्षीय कार्यक्रम की तुलना में चार वर्षीय कोर्स को ज्यादा व्यापक और अनुभवात्मक बनाना चाहिए ताकि प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण क्षेत्र की वास्तविक चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर तैयारी मिल सके। इसके साथ ही, प्रशिक्षण के दौरान मार्गदर्शन और मेंटरशिप की व्यवस्था मजबूत करनी चाहिए ताकि छात्र अपने अनुभवों और समस्याओं पर विशेषज्ञों से लगातार फीडबैक प्राप्त कर सकें। तकनीकी संसाधनों और डिजिटल शिक्षण उपकरणों का समुचित उपयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए जिससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक आकर्षक और प्रभावी बन सके। रोजगार संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण संस्थानों को न केवल शिक्षण कौशल बल्कि करियर परामर्श एवं प्लेसमेंट सहायता भी प्रदान करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक और

सामाजिक विकास के लिए कोर्स के दौरान सह-शैक्षिक गतिविधियों और कार्यशालाओं का आयोजन बढ़ाना आवश्यक है। छात्र अध्यापकों की अभिवृत्ति में सुधार के लिए संस्थानों को नियमित रूप से उनकी प्रतिक्रिया लेना और पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन करना चाहिए। अंत में, शिक्षक समुदाय और समाज के बीच शिक्षक के महत्व और भूमिका को जागरूक करने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे प्रशिक्षणार्थियों का प्रोफेशनल नैरेटिव सकारात्मक और प्रेरणादायक बने।

❖ **निष्कर्ष**

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि भारत में द्वि-वर्षीय और चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रमों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति में कुछ महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान हैं। चार वर्षीय कार्यक्रम को अधिक व्यापक, व्यावहारिक और आधुनिक माना जाता है, जिसके कारण इसमें शामिल छात्र अध्यापक अधिक सकारात्मक और उत्साहित दृष्टिकोण रखते हैं, जबकि द्वि-वर्षीय कार्यक्रम की त्वरित और संक्षिप्त प्रकृति के कारण कुछ प्रशिक्षणार्थी इसे अधूरा और कम संतोषजनक मानते हैं। दोनों कार्यक्रमों में व्यावहारिक प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और रोजगार की संभावनाओं को लेकर भी अभिवृत्तियों में फर्क पाया गया है। इसके बावजूद, दोनों ही कार्यक्रमों का उद्देश्य गुणवत्ता पूर्ण शिक्षक तैयार करना है, जिसके लिए पाठ्यक्रमों में निरंतर सुधार और समायोजन आवश्यक हैं। अध्ययन से यह भी पता चला कि प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति उनके शैक्षणिक अनुभव, संसाधनों की उपलब्धता और संस्थान के सहयोग पर निर्भर करती है। इसलिए, शिक्षा नीति निर्माताओं और संस्थानों को चाहिए कि वे छात्र अध्यापकों की आवश्यकताओं को समझते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावशाली और आकर्षक बनाएं। अंततः, शिक्षण पेशे के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करना न केवल शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाएगा, बल्कि पूरे शैक्षिक तंत्र में सुधार और छात्रों के बेहतर परिणाम सुनिश्चित करेगा।

संदर्भ सूची

1. कुमार, ए. (2020). टीचर एजुकेशन इन इंडिया: चैलेंजेज एंड ऑपरच्युनिटीज इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ NEP 2020. जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 15(3), 45-56.
2. कुमार, के., और कुमार, जे. (2019). अटीट्यूड ऑफ स्टूडेंट-टीचर्स टुवर्ड्स फोर ईयर इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम. थिंक इंडिया जर्नल, 22(10), 1536-1545.
3. कोनेरी, आर., और श्रीनिवासाचारुलु, ए. (2018). पर्सपेक्टिव ऑन इम्प्लीमेंटिंग फोर ईयर बी.एड. प्रोग्राम इन इंडिया. रिसर्च मैग्मा, 2(1), 78-83.
4. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. (2022). इकोनॉमिक सर्वे 2021-22. मिनिस्ट्री ऑफ फाइनेंस, डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक अफेयर्स. https://www.indiabudget.gov.in
5. गुप्ता, आर., और सिंह, ए. (2022). टीचर एजुकेशन इन इंडिया: इमर्जिंग ट्रेंड्स एंड चैलेंजेज. जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, 10(1), 23-35.
6. चक्रवर्ती, ए.के., और बेहरा, एस.के. (2014). अटीट्यूड ऑफ द फीमेल टीचर-ट्रेनीज टुवर्ड्स द एक्जिस्टिंग बी.एड. सिलेबस ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बर्दवान: एन एम्पिरिकल स्टडी. अमेरिकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 2(12A), 31-36.
7. निवास, आर. (2018). ए स्टडी ऑफ टीचिंग कॉम्पिटेंसी इन रिलेशन विद अटीट्यूड टुवर्ड्स क्रिएटिव टीचिंग ऑफ बी.एड. ट्रेनी टीचर्स. जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 9(4), 66-72.
8. नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन (NCTE). (2014). नॉर्म्स एंड स्टैंडर्ड्स फॉर बैचलर ऑफ एजुकेशन प्रोग्राम. https://ncte.gov.in
9. पटेल, आर.के. (2021). ए स्टडी ऑन इनोवेटिव प्रैक्टिसेज इन टीचर एजुकेशन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), 9(6), 37-45.
10. पाटिल, एम., और वेंकटेश, के. (2021). ए स्टडी ऑन अटीट्यूड्स ऑफ टीचर एजुकेटर्स ऑफ कालबुर्गी एजुकेशन डिवीजन टुवर्ड्स फोर ईयर इंटीग्रेटेड बी.एड. कोर्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), 9(6), b37-b45.

11. पात्रा, के.सी., और बसंतिया, टी.के. (2021). इंटीग्रेटेड प्रोग्राम्स इन एजुकेशन: डेवलपमेंट एंड करंट स्टेटस. हायर एजुकेशन फॉर द फ्यूचर, 8(2), 180-196.
12. मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन. (2020). नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
13. मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन. (2023). ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE) 2021-22. डिपार्टमेंट ऑफ हायर एजुकेशन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. https://aishe.gov.in
14. मिश्रा, पी. (2019). हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स ऑन इंडियन एजुकेशन सिस्टम. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, 8(2), 67-78.
15. वर्मा, एम., और गुप्ता, आर. (2019). अटीट्यूड ऑफ बी.एड. ट्रेनीज टुवर्ड्स टीचर एजुकेशन प्रोग्राम्स: ए कम्पेरेटिव स्टडी. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, 7(1), 34-47.
16. शर्मा, आर., और शर्मा, एस. (2018). क्वालिटी टीचर एजुकेशन इन इंडिया: इश्यूज एंड चैलेंजेज. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 12(2), 89-102.
17. शर्मा, एस. (2021). एवोल्यूशन ऑफ टीचर एजुकेशन इन कोलोनियल इंडिया. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल हिस्ट्री, 14(3), 89-102.
18. साओ, एस., और बेहरा, एस.के. (2016). स्टूडेंट-टीचर्स' अटीट्यूड टुवर्ड्स टू-ईयर बी.एड. प्रोग्राम विद रेफरेंस टू NCTE रेगुलेशन, 2014. पेडागोजी ऑफ लर्निंग, 2(3), 09-24.
19. सुधा, एस. (2017). अटीट्यूड ऑफ स्टूडेंट टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स टुवर्ड्स टू ईयर्स बी.एड. कोर्स. पैरिपेक्स – इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च, 6(1), 212-214.
20. हसीन ताज. (2018). फोर ईयर इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम्स: इश्यूज एंड चैलेंजेज. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनफॉर्मेटिव एंड फ्यूचरिस्टिक रिसर्च, 6(6), 21-34.